Bharat - The Mother of Democracy

A 31 gun salute to the President heralded the birth of Indian Republic shortly before 1030 hours on January 26, 1950. It was 894 days after the country attained the dominion status following the end of British rule. The ceremony was held in the brilliantly decorated Darbar Hall of the Government House (now Rashtrapati Bhawan) and was attended by about 500 prominent dignitaries including Dr Soekarno, the President of Indonesian Republic. It was the beginning of a new Republic based on the principles of justice, liberty, equality and unity.

This (26th January 2024) being the 75th Republic Day inspires us to look back and realize that Bharat has been the beckon of Democracy long before this idea was rediscovered by western thinkers. It is no surprise that after independence, the people of this country took to democracy as duck takes to water.

India had a history of Republics that existed before and after Buddha. One such republic was Lichchhavi which was a part of Vajjika territory and contemporary village of *Basarh* in Vaishali district of Bihar. The references of Lichchhavi are in Pali, Tibetan, Jain, Greek, Nepalese, and Chinese and Sanskrit texts. Universal Civil rights, franchise, general assembly, rule of law, deliberation and procedures of committees and appeals are the democratic features, which were well established in Lichchhavi *Gana-Rajya*. Lichchhavis had an open and secret ballot system; their presidents (*ganapati*), Vice presidents (*up ganapati*), army chiefs (*senapati*), ambassadors and other key heads of administration-judiciary were elected through consensus and electoral contests, if required.

It was one of the earliest document reference to democracy and hence can be called mother of democracy in the recorded history of mankind. It operated on the principal that 'let one faulty escape than to punish one who is not guilty'. It was a role model for Buddha. His *Sangh* was founded on the functioning style of this Lichchhavi *gana-rajya*.

Sangam literature and epigraphical sources throw valuable information on the socio-economic condition of Tamil Nadu. In the Chola period, the Uttiramerur inscription of C. 919 and 921 CE of the Chola king, Parantaka I, laid down the rules for the election of persons to the several committees which administered the village. It mentions the *nagaram*, which denotes both the town of the merchants and their assembly, the *ur* or village assembly and the *urar* (members of the village assembly). The different local bodies coexisted peacefully. The leader of the *mahasabha/ sabha* was an elected representative. It highlights an early form of decentralized governance in the region.

Uttiramerur inscription describes a meticulous electing process for members of the *Sabha*. It involved a lottery system, ensuring fairness. The eligibility criteria included age, property ownership and moral conduct. The *Sabha* served as a committee responsible for various administrative functions, including resolving disputes, maintaining law & order and overseeing local affairs. Major decisions were taken through discussions and consensus-building. For accountability, the inscription mentions provisions for impeaching and removing individuals from the *sabha* if found guilty of misconduct or corruption.

Sikhism, founded by Guru Nanak in the 15th century, embodies several democratic ideals that promote equality, justice and community participation. It emphasizes the equality of all individuals, irrespective of caste, creed, gender or social status. The concept of *'Ik Onkar'* (One supreme reality) underscores the oneness of humanity and rejects any form of discrimination.

The Sikh tradition encourages active participation of its followers in community affairs. The Institution of *langar* (community kitchen) exemplifies Sikh democratic values, promoting social equality and community solidarity. The Sikh prayer '*Sarbat da Bhala*' translates to 'May everyone be blessed' promotes an inclusive and compassionate society. The *Gurmata* system involves reaching consensus through discussion and agreement among community members.

When Bharat is entering into Amrit Kaal, it is opportune time to reclaim the legacy of our forefather and great thinkers who sowed the seed of Democracy in our DNA. Bharat was, is and will remain forever the Mother of Democracy.

Department of Posts is delighted to release a miniature sheet of 3 commemorative postage stamps on Bharat – The Mother of Democracy and salutes the democratic spirit of world's largest democracy.

Credits:

Miniature Sheet /FDC/Brochure/: Sh. Suresh Kumar

Cancellation Cachet

Text : Referenced from content provided by Proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका BROCHURE





भारत- लोकतंत्र की जननी

BHARAT- THE MOTHER OF DEMOCRACY

'भारत-लोकतंत्र की जननी'

ब्रिटिश शासन काल के पराभव के पश्चात् देश को 'डोमिनियन' का दर्जा प्राप्त होने के 894 दिन बाद, 26 जनवरी, 1950 को 10:30 बजे से कुछ ही देर पहले राष्ट्रपति को दी गई 31 तोपों की सलामी के साथ भारत गणराज्य का जन्म हुआ। यह समारोह गवर्नमेंट हाउस (अब राष्ट्रपति भवन) के भव्य रूप से सुसज्जित दरबार हॉल में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर इंडोनेशिया गणराज्य के राष्ट्रपति डॉ. सुकर्णो सहित लगभग 500 प्रमुख हस्तियां उपस्थित थीं। यह वह पल था, जब न्याय, स्वतंत्रता, समानता और एकता के सिद्धांतों पर आधारित एक नए गणराज्य का उदय हुआ।

इस वर्ष (26 जनवरी, 2024) भारत अपना 75वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। यह हमारे लिए अत्यंत गौरव का अवसर है जो हमें यह याद दिलाता कि पश्चिमी विचारकों द्वारा गणतंत्र को अपनाने से बहुत पहले से भारत, लोकतंत्र का ध्वजवाहक रहा है। अतः इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि स्वतंत्रता पश्चात् इस देश के लोगों ने गणतंत्र को बड़े ही सहज भाव से स्वीकार किया।

भारत में महात्मा बुद्ध से पूर्व और उनके बाद भी गणराज्यों की मौजूदगी का इतिहास रहा है। लिच्छवि एक ऐसा ही गणराज्य था, जो वज्जिका क्षेत्र और आधुनिक बिहार के वैशाली जिले के बसाढ़ गांव का हिस्सा था। इस लिच्छवि गणराज्य का संदर्भ पाली, तिब्बती, जैन, ग्रीक, नेपाली और चीनी तथा संस्कृत साहित्य में मिलता हैं। सार्वभौमिक नागरिक अधिकार, मताधिकार, आम सभा, विधि का शासन, समितियों द्वारा विचार–विमर्श और प्रक्रियाएं तथा अपील जैसी लोकतांत्रिक विशेषताएं लिच्छवि गणराज्य में सुस्थापित थीं। लिच्छवि में मतदान की स्वतंत्र और गुप्त प्रणाली थी और उनके गणपति, उप–गणपति, सेनापति, राजदूत तथा प्रशासनिक एवं न्यायिक प्रमुखों का निर्वाचन सर्वसम्मति से तथा आवश्यकता पड़ने पर मतदान द्वारा किया जाता था।

यह, लोकतंत्र के प्राचीनतम दस्तावेजी संदर्भों में से एक था, इसलिए इसे लिखित मानव इतिहास का सबसे पुराना लोकतंत्र अथवा लोकतंत्र की जननी कहा जा सकता है। यह लोकतंत्र इस सिद्धांत पर कार्य करता था कि 'किसी निर्दोष को सजा देने से अच्छा है कि कोई दोषी मुक्त हो जाए'। महात्मा बुद्ध के लिए भी यही आदर्श था। उनके संघ की स्थापना लिच्छवि गणराज्य की कार्य पद्धति के आधार पर ही की गई थी।

संगम साहित्य और पुरालेखीय स्रोत, तमिलनाडु की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराते हैं। चोल काल में, चोल राजा परान्तक–I के समय, 919 और 921 ई. के उत्तरमेरूर के शिलालेखों में गांवों के प्रशासन का उत्तरदायित्व संभालने वाली विभिन्न समितियों के लिए व्यक्तियों के निर्वाचन के संबंध में नियम लिखे गए थे। इनमें नगरम्, अर्थात् व्यापारियों का कस्बा और उनकी सभा, दोनों 'उर' अथवा ग्राम सभा और 'उरार' (ग्राम सभा के सदस्य) का उल्लेख मिलता है। विभिन्न स्थानीय निकाय शान्तिपूर्ण ढंग से मिल–जुल कर रहते थे। महासभा/सभा का नेता, एक निर्वाचित सदस्य होता था। ये शिलालेख, इस क्षेत्र में विकेन्द्रीकृत सरकार के आरंभिक स्वरूप पर प्रकाश डालते हैं।

उत्तरमेरूर शिलालेख में सभासदों की निर्वाचन प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दिया गया है। इस प्रक्रिया में निष्पक्ष लॉटरी प्रणाली भी शामिल थी। साथ ही पात्रता हेतु विभिन्न मानदण्ड निर्धारित थे जैसेकि आयु, सम्पत्ति और नैतिक आचरण। यह सभा, विवादों के निपटान, कानून व्यवस्था बनाए रखने और स्थानीय मामलों के पर्यवेक्षण सहित विभिन्न प्रशासनिक कार्यों के लिए उत्तरदायी समिति के रूप में कार्य करती थी। सभी प्रमुख निर्णय, विचार–विमर्श और सर्वसम्मति से लिए जाते थे। जहां तक जवाबदेही तय करने की बात है, तो कदाचार या भ्रष्टाचार का दोषी पाए जाने की स्थिति में उस सदस्य पर महाभियोग चलाने और उसे सभा से हटाने के प्रावधानों का भी उल्लेख इन शिलालेखों में मिलता है।

15वीं शताब्दी में गुरू नानक जी द्वारा सिख धर्म की स्थापना की गई। सिख धर्म समानता, न्याय और सामुदायिक भागीदारी जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देता है। इसमें इस बात पर भी बल दिया जाता है कि सभी व्यक्ति समान हैं, चाहे वे किसी भी जाति, पंथ, लिंग अथवा सामाजिक स्तर के हों। सिख धर्म में 'एक ओंकार' (एक सर्वोच्च सत्य) की अवधारणा, बिना किसी भेदभाव के मानवता की एकात्मता को रेखांकित करती है।

सिख धर्म अपने अनुयायियों को सामुदायिक सेवा में सक्रिय रूप से प्रतिभाग करने हेतु प्रोत्साहित करता है। लंगर (सामुदायिक रसोई) की व्यवस्था, सिख समुदाय के लोकतांत्रिक मूल्यों का उदाहरण है, जो सामाजिक समानता और सामुदायिक एकता को बढ़ावा देती है। सिख प्रार्थना 'सरबत दा भला' अर्थात् 'सभी का कल्याण हो', एक समावेशी और करुणामयी समाज की प्रेरणा देती है। गुरुमाता प्रणाली में, विचार मंथन और सहमति के द्वारा समुदाय के सदस्यों के बीच सर्वसम्मति बनाने की व्यवस्था है।

आज जब भारत अमृतकाल में प्रवेश कर रहा है, तो यह उपयुक्त समय है कि हम अपने पूर्वजों और महान चिंतकों की विरासत को पुनर्जीवित करें, जिन्होंने हमारे मन–मस्तिष्क में गणतंत्र का बीजारोपण किया। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि भारत लोकतंत्र की जननी था, है और सदैव रहेगा।

डाक विभाग, 'भारत–लोकतंत्र की जननी' विषय पर 3 स्मारक डाक–टिकटों की एक मिनियेचर शीट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और विश्व के इस सबसे बड़े लोकतंत्र की लोकतांत्रिक भावना को नमन करता है।

आभार :

मिनियेचर शीट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री सुरेश कुमार

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे (3)
Denomination	: 500 p (3)
मुद्रित मिनियेचर शीट	: 143334
Miniature Sheets Printed	: 143334
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00